121 P
543
H
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1278
10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 543

103
STAFF
CAWNPORE

* बन्देमातरम् *

महात्मा गान्धी का
स्वतन्त्र आल्हा

मिट्ठनलाल पुरवा जि० उन्नाव निवासी कृत

प्रकाशक-

लाला बाबूलाल बुकसेलर

मंदिर प्रयागनारायण कानपुर

सन १९३० ई०]   [मूल्य -)॥

सिर्फ टाइटल पेज गोविंद प्रेस कानपुर में छपा.

891.43
Pu 978 S

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 543
Date 13.12.71
GOVT. OF INDIA

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

* ओ३म् *

स्वतन्त्र आल्हा

ओङ्कार की विनती करता जो है सकल सृष्टि आधार ।
सुर मुनि जाको ध्यान लगावें महिमा जाकी अपरम्पार ॥
निराकार जगदीश अजन्मा महादेव सृष्टो करतार ।
कर्मों का फल देने वाला जीव प्रकृति का है सरदार ॥
अब कहैं हकीकत आर्यवर्त की सुन लो भरत खन्ड के भाय ।
जो इतिहास हमारे कहते उसको हम दें गाय सुनाय ॥
जगत गुरू यांके थे ब्राह्मण क्षत्री चक्रवर्ति कहलाय ।
पारस मणि थी भूमि देश की कथन करे सब देयँ बताय ॥
महभारत से चक्रवर्ति गई पृथी राज से राज बिलाय ।
ऊंचे थे सो नीचे हो गये काल चक्र सों कहा बसाय ॥
नाना दुःख देश ने पायो अधरम फैल रहा संसार ।
यवन काल में धर्म नशाये उस के कथन में हैं लाचार ॥
कोटिन भाई मुस्लिम हो गये जो भारत में रहे दिखाय ।
आघात धर्म पर बहुत हो गये जा इतिहास ने दिया बताय ॥
पर बहुतक राजा यवन राज्य में न्यायो दयावान कहलाय ।
यवन यहाँ के खुद वासो थे दौलत यहां की यहाँ दिखाय ॥

परजा की वह रक्षा करते राज्य धर्म के जानन हार।
धन से भरा पूरा भारत था हिन्दुन मन्त्री तक अधिकार ॥
शस्त्र छीन औरत नहिं कीन्हा ना अन्याय के नियम चलाय।
परजा का धन परजा हित था नाहीं दुकन्दारी दिखलाय ॥
नाहीं इतनी मालगुजारी नाहीं टिक्सों की भरमार।
नाहीं वस्तु बिदेशी आवे नाहीं धन विदेश को जाय ॥
तिलहन अन्न रुई लोहा भी नाहीं बाहर को ये जाय।
सुबरण मय अरु अन्नपूर्णा ऐसी भारत भूमि कहाय ॥
बनकर कपड़ा और बस्तुएँ यां से देशान्तर को जांय।
जिसके लाभ में भारत बासी अर्बों रुपया वहां से लांय ॥
परअबभी यांकुछ और होनथा यहांपर हुआ अशांति काशोर।
सिक्ख मरहठा और मुस्लिम में होने लगे युद्ध घनघोर ॥
जिस का फल यह हुआ देश में कूदि फिरंगी पहुंचे आय।
भाइन २ द्वेष बढ़ाकर अपनी सत्ता लिहिन बढ़ाय ॥
अस्त्र शस्त्र वह छीन लेगये हमको औरत दियो बनाय ॥
कला कौशल को नष्ट करदिया अपनी लीला दियो फैलाय।
कर किये जारी कर्घे तोड़े अपना बनिज दियो फैलाय ॥
नाना विधि से दौलत लूटी अत्याचार दियो फैलाय।

ब्रटिश राज्य काल

धनि २ रानी विक्टोरिया को अपनी आज्ञा कियो प्रचार।
भारत बासी पुत्र हमारे करिहैं यकसां हम व्योहार॥
लाभ उठाना नहिं इच्छा है गड़बड़ हम सब दिहैं मिटाय।
शान्ति भये फिर राज्य को दंगे तब तक वली रहेंगे भाय॥
दियो दिलासा आंसू पोछियो दिल में ढाढ़स दियो बंधाय।
पुत्र चिरंजीव पोते उनके उनके बचन दियो दुहराय॥
देश शांती भारत हो गई मिट गयो देश से अत्याचार।
गांव २ में खुले मदरसे कीन्हो विद्या का परचार॥
औषधालय पोस्ट आदि से परजा बहुत खुशी हो जाय।
सड़कें बनिगई भरत खन्ड में आंखे मूदि चला सब जाय॥
रेल तार न्यायालय हुए जारी अब तो युग ही नया दिखाय।
कांगरेस आदि सभा हुई जारी परजा के जो कष्ट सुनाय॥
पर खींच विदेशी धन को लेगये तरह २ की युक्ति चलाय।
कला कौशल उन नष्ट कराये सबको मुफलिस दियो बनाय॥
हीरा मोती सोना चांदी पहुंचे सात समुन्दर पार।
खाने को भी अन्न न रहता भारत हा हा कार-पुकार॥
राज काज में अनहित अपना इससे हम करते फरियाद।
पुत्र पिता से हरदम मांगे नहीं यह राज द्रोह बकवाद॥
होन हार हम पुत्र पिता के करि हैं अपना हम सब कार।

अब नहीं बली हमारे रहियें हम पर हुकुम चलाने हार ॥
पिता का नौकर कोई होवे पुत्र का नौकर भी कहलाय ।
प्रजा के नौकर नौकरशाही कहता न्याय हमें बतलाय ॥
नौकरशाही के हम स्वामी हम पर करते अत्याचार ।
यह अन्याय न सहते बनता उनके बनन बिगाड़न हार ॥
क्यों हम थोड़ा वेतन पावें पावें विदेशी वे शुम्मार ।
हम थोड़े अधिकारी क्यों हैं भारत भूमी मातु हमार ॥
अस्त्र शस्त्र हम क्यों नहिं पावें जब सब दुनियां रही संभार ।
जान माल की रक्षा कारण वेदों ने दीन्हा अख्त्यार ॥
ऊंचे पद हम क्यों नहिं पावें महरानी जो कह्यो पुकार ।
भारत का धन भारत को है चहिये प्रबन्ध भारतीयन क्यार ॥
भारत सम इङ्गलैंड देश है फिर क्यों इकसाँ नहिं व्यवहार ।
हम मूरख विद्वान वहां के ऐसा विद्या का परचार ॥
ऊंची विद्या और परीक्षा क्यों नहिं होती भारत भाय ।
इसका कारण नहिं बतलावें यह तो कूट नीति दिखलाय ॥
यहाँ पर सौ में पुरुष पढ़े छः औरत एक पढ़ी कहलाय ।
और देश सब पढ़ें पढ़ावें मुफ्त जबरिया नियम चलाय ॥
नौ पाई हर मनुष्य की आमद पैत्रिक धन सब दिया गंवाय ।
जेवर भूषण की नाहीं भई भारत हाय हाय चिल्लाय ॥
घी और दूध की नाहीं होगई बल बीरज जो देय बढ़ाय ॥
नाना रोग देश रहे छाये आयू घटी भारतियन भाय ॥
पशु धन नष्ट होत हैं निश दिन जो बल कृषी बढ़ावन हार ।

नाहक उन पर चले कटारी बूचड़खाना बे शुम्मार ॥
सौ में पचासी कृषक देश में उनका हाल देउं बतलाय ।
सह कुटुम्ब यह परिश्रम करते रोटी पेट भरी नहिं पाय ॥
फड़ुआ बैल के संग में लड़ते जाड़ा गर्मी औ बरसात ।
एक वस्त्र से हर ऋतु झेलें जाड़ा तापि गुजारैं राति ॥
मालगुजारी टेक्स बढ़न से जमींदार दियो पोत बढ़ाय ।
पोत बढ़न से सब कुछ मँहगा परजा हाय हाय चिल्लाय ॥
बनिज और ब्योपार लिया सब हम को कुली बनायो आय ।
कुत्ते से कम क़दर कर रहे यह है कर्मों का फल भाय ॥
देश उजारन के कारन से अङ्गरेजन दियो रेल चलाय ।
नक़ली चीजें घर २ तोपियो उम्दा वस्तु बिलायत जाय ॥
गल्ला तिलहन और वस्तुयें यां से देशान्तर भिजवाय ।
दैवी गति और नहर कमी से झूरा बार बार दिखलाय ॥
सभ्य देश के यहाँ मुक़ाबिल चौगुन रेलों का बिस्तार ।
जल और थल के मार्ग उजड़ गये रेल जहाजन के परचार ॥
दूना पानी देश में बरसे जितना खेती को दरकार ।
पानी रोकन के कुबन्ध से झूरा खड़ा रहे तय्यार ॥
यहाँ फिरङ्गी कूटनीति से गाड़ी नाव को बन्द कराय ।
भारत का ले लिया बनिज सब भारत की प्रभुता को पाय ॥
नौकरशाही जुल्म देख कर परजा बहुत रही घबड़ाय ।
बङ्ग भङ्ग ने आनि जगायो नश्तर करजन दियो लगाय ॥
भारत देश सचेत हो गया घर घर हुआ स्वदेशी राग ।

राज्यद्रोही बनी युवक मण्डली घर २ बम्ब बनन फिर लाग।
वही समय था वही औसर पर दादा भाई पहुंचे आय॥
प्राण बचाये नौ युवकों के दीन्हीं युक्ती नेक बताय।
होमरूल सब मिलकर मांगो तुम्हरे कष्ट दूरि होजांय॥
मनो कामना पूरी होइ हैं बिगड़े कार्य्य सिद्धि होजांय।
अनहित अपना देश विदेशी अपना हमको दियो कोर्ट पहुंचाय
पर धन्य न्याय की है परशंसा पाला रह्यो स्वदेशिन जाय॥
एक युक्ति यहनई निकाली उसको भी सुनिये चित लाय।
सबका उत्तर उन्होंने पाया नये २ करने लगे उपाय॥
बाबू सभा कांगरेस बोले हिन्दू मुस्लिम में नहिं मेल।
या ते नहिं स्वराज्य अधिकारी ऐसा बोलन लागे बोल॥
हिंदू मुस्लिम दोनों मिलि गये कांग्रेस लाखों पहुंचे आय।
शत्रुन दल में गड़बड़ मच गई अब क्या करिये और उपाय।
गूञ्ज स्वराज्य की भारत फैली घर २ चरचा होने लाग॥
वज्र पात सम गिरयो शत्रु पर उनके दिल में लागी आग।
देश शत्रु खुदगर्ज स्वदेशी अपने दल में लिये मिलाय॥
जो यह दस्तखत करके भेजैं हमको नहिं स्वराज्य की चाह।
उन पर बल हम राजी होंगे दिल में डैम फूल फर्माय॥
कारज हमरा सभी सिद्धि हो बिगड़ी बात सभी बन जाय॥
पर बाढ़ तेज दरिया की कबलों तिनका रोक सकेगा यार।
शत्रु सघन भी दल बल लेकर बहि गये सात समुन्दर पार॥
नौकर शाही ने फिर मिलकर नई चाल एक निकाली आय

इसको भी अब आगे समझो जो इन युक्ती दियो फैलाय॥
होमरूल इस समय न मांगो यह है समय लड़ाई क्यार।
अब नहीं मांगो तुम स्वराज्य को पीछे माँगना मेरे यार॥
चाल में आगये कुछ तो अगुआ हाँ में हाँ जो मिलावन लाग।
पर बुद्धिमान यह चाल पुकारैं भारत सोच समझ तू जाग॥
यहाँ की बातें हियनै रहगईं अब आयर्लैन्ड का सुनौ हवाल।
आयरिश परजा ने जो कीन्ह्यो उसका भी सुनलो अहवाल॥
वही समय्या वही औसर पर आयरिश परजा शोर मचाय।
हमको जल्द स्वराज्यहि देदो वरना खैर नहीं है भाय॥
यहाँ दिलासा वहाँ निपटारा यह क्या बात नई दिखलाय॥
होश सभाला चाल विचारी अब रहा और रङ्ग लखाय।
मातृ भूमि को बन्धन करके अपने इष्ट मनाने लाग॥
भारत को स्वराज्य भी चहिये जब आयरिश भी मांगन लाग।
कमर को कसकर कार्य्य क्षेत्र में बहुतक कूदि भये तय्यार।
दो स्वराज्य हम योग्य होगये यह रहे भारत वार पुकार॥
होमरुल की शेरनाद जब वह पहुंचा है इंगलिस्तान।
मांटेगू उठ खड़े हो गये कीन्हा भारत का प्रस्थान॥
मांटेगू शहरों में जाजा सब से खूब मिलाये हाथ॥
भारत से इंगलैंड जान में लीन्ह्यों चैम्स फोर्ड को साथ।
सबने मिलकर युक्ती सोची महाराजा से किया सलाह॥
भारत को कुछ देना चाहिये जिससे सबका हो निर्वाह॥
बादशाह ने किरपा कीन्हा हमको कुछ देदियो स्वराज।

और कहा फिर आगे देंगे जब तुम अच्छा करिहो काज ॥
बिकाल युद्ध युरुप के मौका भारत चन्दा दिया कराय ।
अरबों रुपया कर्जा दीन्हों अपना सरबस दियो लगाय ॥
लाखों ज्वोन कटे भारत के जिनकी ललना रहिं बिलखाय ।
उनके जियरा को समझावे जिन के ज्वान कन्थ कटि जांय ॥
मात पिता गुरु भाई रोवैं खून के आंसू रहे बहाय ।
तन मन धन सब अर्पण कर दियो राजा हित दियो प्राणलगाय
जीति ब्रटिश की भई जगत में दुश्मन हारि मानि रहि जाय ।
पर भारत का लाभ हुआ क्या जिसको पाय खुशी हो जाय ॥
संसार स्वतन्त्रता सुख भोगन को ब्रटिश लड़ा युद्ध में जाय ।
क्यों स्वराज्य भारत नहिं पावे तन मन धन जो दिया लगाय ॥
उलटा रौलेट एक्ट पास कर बोलती भारत बन्द कराय ।
हा हा कार देश पर छायो कैसा बदला मिल्यो यह आय ॥
रौलेट एक्ट रद्द होने को परजा बहुत रही चिल्लाय ।
हाय बिधाता गजब गुसइयां किसकी शरण नाथ अब जांय ।
को दुख मेटन हार हमारा अब तो तुमहीं में चित लाय ॥
जब २ बिपति परी भारत पर तब २ तुमहीं भये सहाय ।
घोर दुःख में भारत बासी उनको डूबत लियो बचाय ॥
एक दुःख यह नहिं भूला था दूसर गिरी स्वर्ग से गाज ।
भारत माता का वह प्यारा सब के सर का था जो ताज ॥
ज्ञान प्राप्त करि ज्ञान प्रकाशा तन मन धन सब दियो लगाय ।
रात दिना उपदेश धर्म कर भारत बासिन दियो जगाय ॥

राज्य नीति का आदि गुरू वह भारत छोड़ चला महराज ॥
ईश्वर उसको जल्दी भेजो भारत का हो रहा अकाज।
भारत नय्या छोड़ बीच में चल दिन्हा प्रभू के दर्बार ॥
अब किस पर आशा करें प्रभू जी तुमहीं पार लगावन हार।
घर घर शोक मातमी छायो भारत हाय हाय चिल्लाय ॥
स्त्री पुरुष बाल सब रोवें ऊंची छोड़ छोड़ डिन्डकार'
को हमरे हित दुःख उठै है को कारागार होय तय्यार ॥
सिंह समान देश को गर्जी अपने स्वार्थ को लानत मार।
को रक्षा भारत की करि है अपने ऊपर दुःख उठाय ॥
भारत का मिट गया तिलक प्रभु मोहन जी को लेव बचाय।
हम सब को बल बुद्धि ज्ञान दो लाखों तिलक करो तय्यार ॥
सदुपदेश ज्ञान दे हमको इज्जत भारत लेएं सभार।
असहयोग का अस्त्र दे गया जो अब गाँधी रहे फरमाय ॥
स्त्री पुरुष बड़ा अरु छोटा रंग स्वराज्य में रंग गये जाय।
असहयोग है मन्त्र जुदाई जो गांधी का था प्रस्ताव।
कांगरेस सभा पास कर दीन्हों उसने कीन्हों है यह न्याव।
सरकारी नौकरियां छोड़ो वापस करो खिताब जो पाय ॥
मेम्बर कौंसिल के ना हूजो कालिज मदरसा लेव बनाय।
पंचायत स्थापित करिकै अपने झगड़ा लेव मिटाय ॥
सब कोई चीज विदेशी छोड़ो धारन करो स्वदेशी भाय।
आनरेरी मजिस्ट्रेटी छोड़ो परस्वार्थ में निज स्वार्थ बहाय ॥
भारत के नर नारी मिलके देव स्वराज्य की फाग मचाय।

दिल से सायं प्रातः जपियो लाला ने दियो युक्ति बताय।
हिंदू मुस्लिम का यह कलमा अगुवा सबके रहे समझाय॥
जिस स्वराज्य हित फांसी चढ़गये कहकर भारत मातप्रणाम।
जेल सिधारे बहुत यहाँ के जिन के अखबारों में नाम॥
देश निकाला बहुतक हो गये परदेशों में धुनी रमाय।
तप कुटियाँ सब जेलैं हो गईं कोई शर्म करे ना जाय।
लाखों बीर मुसीबत झेलीं परस्वारथ में जान लगाय।
प्राण पखेरू उड़े बहुत के अमृत वह स्वराज्य नहिं पाय॥
अभी तपस्या और मेहनत में कुछ है कमी गैर बतलाय।
अयोग्य विदेशी तुमको कहते तरह तरह की युक्ति बताय॥
दुसरे देशों के इतिहासन भाई खूब पढ़ो चितलाय।
उन स्वराज्य था कैसे पाया मारग वही पकड़ लो आय॥
असहयोग था अस्त्र अपूरब जो गांधी ने बतायो आय।
ऊधम कर दियो कुछ लोगों ने मार काट भी लियो मिलाय॥
चौरी चौरा गड़बड़ कर दियो जो नहिं गाँधी के मन भाय।
उसी के कारन गांधी जी ने शोक किया और कहा समुझाय॥
अधरम हमरे कार्य में हो गया अब नहिं आगे चलिहैं भाय।
असहयोग हुआ बन्द देश में अगुवा कौंसिल पहुंचे जाय॥
इसके जरिये कार्य देश का हम सब करिहैं मन चितलाय।
अङ्गरेजों की कूट नीति से कार्य्य न पड़ता नेक दिखाय॥
बड़े लाट ने अपने बल पर परजा के हित खाक मिलाय।
साइमन जी ने दल बल लेकर भान मती का खेल दिखाय॥

देश ने कह दिया लौटो साइमन तुम्हारी आँच नहीं मनभाय।
लाहौर शहर के इस झगड़े में पुलिस वालों ने कियो प्रहार॥
लाला जी के चोट कलेजा अज़हद पहुंच गई मेरे यार।
पञ्जाब केशरी रण में जूभयो जग में मच गयो हाहाकार॥
भारत के नर नारी कोपे ऊंची छोड़ छोड़ हुंकार॥
पञ्जाब केशरी कहां सिधारे जो पति लाज बचावन हार॥
लेव दुबारा जन्म देश में परमेश्वर की आज्ञा पाय।
दैत्यों का कर देव नाश फिर देवजनों को लेव बचाय॥
अगुवा देश के ऐसे जूझें भारत सहे कलेजे चोट।
धर्म न्याय हमदर्दी उठ गई कर्म्म हो गये ऐसे खोट॥
देश द्रोही खुदगर्ज स्वदेशी साइमन के ढिग पहुंचे जाय।
दे बयान दिल में खुश होवें मानो स्वर्ग की गद्दी पाय॥
शर्म न आवे बेशर्मों को सायमन जांच पढ़ो चित लाय।
जैसे अगुवा पहिले कहते वैसा फल अब दिया दिखाय॥
स्वार्थ जहाँ न्याय क्या होगा राउण्डटेबुल में मेरे भाय।
आज़ादी या मौत ठान लो लो स्वराज्य या मोक्ष को पाय॥
लाला जी के चिता की ज्वाला भारत देश फैल गई जाय।
आज़ादी की उठी अवाजें कांगरेस से भी पास कराय॥
फिर भी गांधी ने विनती की लो ग्यारह शर्त हमारी मान।
तब भी हम कुछ मान लेयँगे सरकारने दीन्हा कुछ नहिंध्यान॥
नशा करा दो बन्द देश से नमक का कर तुम लेव उठाय।
आधी कर दो मालगुज़ारी जमा खर्च हम देंय मिलाय॥

ऊंचे वेतन आधे कर दो फौज का खर्चा देव घटाय।
भारत सिक्का करो बराबर जहाज बनिज में देघ अखत्यार॥
अस्त्र शस्त्र हम रखने पावें जो सब दुनियां रही संभार।
राज द्रोह की सजा उठा दो खुफिया पुलिस को देव हटाय॥
वस्त्र विदेशी कर हो चौगुन देशी वस्तु का करो प्रचार।
मुफलिस देश धनी हो जावे जहं तक तुम्हरे हो अखत्यार॥
रेगुलेशन अट्ठारह रोको हमरे लीडर लेव बुलाय।
कुछ परवाह न किया ब्रटिश ने तब गांधीजी भे लाचार॥
जैसे कृष्णचन्द के समझाये कौरव कुछ नहिं दीन्हा यार।
स्वतन्त्रता का युद्ध छिड़ गया कूदि पड़े कोटिन नर नारि॥
दुर्गा बनकर देवी कूदीं अभिमन्यु सम बालक ललकार।
देवासुर संग्राम छिड़ गया ध्यान प्रभू पर चित्त जमाय॥
एक ओर सत्याग्रही निहत्थे सम्मुख फौज पुलिस दिखलाय।
निहत्था के हथियार प्रभू जी तुमहीं मददगार कहलाय॥
गोली बरसे प्रजा के ऊपर जेर करें डण्डे लगवाय।
भारत आरत बिलख रहा है महादेव दो विजय दिखाय॥
अन्यायी आर्डर हों जारी प्रजा न माने मन चित लाय।
धर्म अधर्म की होय लड़ाई धर्म की जीत पड़ै दिखलाय॥
अगुआ देश हितैषी जितने नौकरशाही दियो कैद कराय।
अबला बालक भी दुख झेलें कितने स्वर्ग सिधारे जाय॥
यह अंधेर कहां तक होगा दुख भञ्जन प्रभु करो सहाय।
अब करें वंदना परमेश्वर की दोऊ कर जोर करें परणाम॥

जो सङ्कट में होय सहायक प्रातः सायं जपो हरि नाम।
अब फुटकर बातें हम बतलावें सज्जन सुनियो कान लगाय॥
ध्यान धरन से सब कुछ जानो नहिं कुछ कहता उसे बढ़ाय।
भारत बासी जितने यां पर हैं दुनियाँ में पाँच में एक॥
भारत चीन मिलाकर आधे बोध धर्म में जो हैं नेक।
दुनियाँ में जिस कदर देश हैं आबादी का सुनो बयान।
लाखों गिनती बहुत जगह की दश बारह का कोटि बखान॥
चीन पैंतालिस भारत इकतिस रूस पन्द्रह कोटि प्रमान॥
बाक़ी सात करोड़ के अन्दर सज्जन सब लें दिल में ठानि॥
ग्रेट ब्रटेन अङ्गरेज जहाँ के साढ़े चार करोड़ बखानि॥
आबादी में भारत दूजा आजादी में नीच समान
आबादी दुनियां का सज्जन कुछ ब्रत्तान्त सुनो चित लाय॥
भारत का अब हाल जान लो शंका सब की फिर मिट जाय।
सात करोड़ मुसल्मां यां पर हिंदू बाइस कोटि बखानि॥
साठ लाख ईसाई देशी दो लाख के भीतर अंग्रेज प्रमान।
सब मुल्कों के चैन उड़ावें भारत रोटी का मुहताज॥
बल बुद्धी से काम न लोगे कैसे बनिहैं तुम्हरे काज।
देश जाति की रस्ता कारण तन मन धन सब देव लगाय॥
ऋषी संतान का गौरव राखो भारत इज्जत लेव बचाय।
हिंदू मुसलिम अरु ईसाई भारत माता सम लो जानि॥
यही पाली हम सब को है भारत हित सब दीजै प्राण।
फिर सब मिलकर मौज उड़ैहौ नाती पोता का कल्यान॥

नाहीं कायर निर उत्साही दुनियां कहिहै तुम्हैं बखानि॥
भारत में पानी नहिं बरसे झूरा किसको नहीं सताय।
महंगी बस्तुन के होने से किसको दुखदाई नहिं भाय॥
भारत हित में सब का हित है भारत दुख में दुःख महान।
सब मिल दुःख मिटाओ इसके जो चहते अपना कल्यान॥
भिख मंगों को राज्य न मिलता चाहै कितना करैं उपाय।
योग्य तपस्वी को सब मिलता मन बुद्धी जो देय लगाय॥
सुख सम्पति जो करे निछावर काम पड़े जो जान लगाय।
फिर स्वराज्य क्या चीज सामने इच्छा करे वही मिल जाय॥
बकने का अब समय नहीं है कार्य क्षेत्र में कूदो आय।
बिना कर्म के कार्य्य न होता करता बिन नहिं कार्य्य लखाय॥
कर्त्ता के बिन कर्म किये से कार्य न होता बिना उपाय।
याते कर्म करो निःस्वारथ सब कर्तब्य समझ कर भाय।
अन्याय हटाना धर्म तुम्हारा गीता पढ़ो चित्त को लाय।
जुल्म सहे अन्याय भी देखे वह फिर मानुष क्यों कहलाय॥
अधर्म रोकन के कारन हित प्राण पखेरू जांय उड़ाय।
सच्ची मुक्ती उसको मिलती हमरा धर्म रहा समुझाय॥
आज़ादी है स्वर्ग बरावर बन्धन नर्क का है स्थान।
कर्मों का फल ईश्वर देता यह वेदों ने किया बखान॥
नर्क स्वर्ग आधीन तुम्हारे जैसा कर्म करोगे आय।
वैसा फल सब को मिल जावे ईश्वर न्यायकारि कहलाय॥
भारत के सब कष्ट मिटाओ तुम्हरे कष्ट सभी मिट जाँय।

धूम धर्म की मचे देश में कारज सभी सिद्ध हो जांय ॥
नशा कुकर्मों को सब छोड़ो वस्तु स्वदेशी लो अपनाय ।
भारत वासी सब मिल जाओ कार्य्य क्षेत्र में कूदो आय ॥
अबला रण में कूदि पड़ी हैं बालक भी अब रहे ललकार ।
अबलों की अबला हो कायर जिनके जीवन को धिक्कार ।
छप्पन लाख देश में साधू ओ संकट में आवें काम ।
चौदा लाख रोज का खरचा जो गृहस्थों के परजा नाम ॥
विनती सब को करना चहिये सब लगि जाँय देश के काम ।
अगर न मानैं विनती तुम्हरी हरगिज दीजो नहीं छदाम ॥
आज़ादी या मौत ध्येय हो हर प्रकार कल्याण दिखाय ।
याँ पर सब स्वराज्य को पावैं मरने पर मुक्ती को पाय ॥
न्याय धर्म से हक हम लेंगे वली न रक्खेंगे अब भाय ।
इनके कारज सभी देख लिया प्रभुता पाय गये इतराय ॥
वेद कहैं हो देशी राजा जो परजा सब लेय बनाय ।
प्रजा कुमेटी को वह माने राज्य नियम पर प्रजा चलाय ॥
है स्वराज्य सब देशों कायम फिर हम क्यों ना पावैं भाय ।
अंगरेज़ वलीपन छोड़ें हम पर संगति हमरी बैठें आय ॥
पिता समान जार्ज पन्जुम हैं भाई सम उन के युवराज ।
इनसे द्रोह कबहूं नहिं कीज्यो मालिक सबके वह महराज ॥
न्याय धर्म से हक सब ले लो जो परजा के हैं अख्त्यार ।
शाँती भङ्ग होन नहिं पावे विनती यही है बारम्बार ॥
कर्तव्य धर्म से च्युत नहिं होना उस पर डटे रहो सब यार ।

है स्वराज्य नजदीक तुम्हारे इस को देना अब नहिं टार।
ग्राम ग्राम में बनें कमेटी घर घर मेम्बर बनो सिपाह।
नर नारी बालक अरु बूढ़े सब इस कार्य में करो निगाह ॥
वस्तु विदेशी दिल से छोड़ो नशा कुकर्मों देव मिटाय।
घर घर चर्खे खूब चलाओ अपने कपड़े लेव बनाय ॥
पंचायत से झगड़े मेटो अपना धन सब लेव बचाय।
सब मिल कर के फाग मचा दो डूबत भारत लेव बचाय ॥
हम स्वराज्य अब लेके रहिहैं या दे हैं सब प्राण गंवाय।
मर मर बाद बाद भी जन्मे फिर भी करेंगे ऐही भाय ॥
हैं थोड़े अन्यायी हम पर इतनी भेंड़ न ताकन हार।
बीर पुत्र हम भारत बासी कहाँ तर्क करेंगे अत्याचार ॥
अहिंसात्मक शांतिमई है पहिला हमला सुनियो भाय।
धर्म हमारा साथी जब है विजय में प्रभु जी करें सहाय ॥
मन बानी अरु कदम उठाना एकसा कार्य में पड़े दिखाय।
मन बांछित फल ईश्वर देगा वेदों ने दी युक्ति बताय ॥
घोर दुःख सब उठा चुके हैं अब प्रभु देहैं दुःख नशाय।
दुख के बाद सुःख है मिलता काल चक्र का यही है न्याय ॥
राजा परजा हित के कारण सच्ची बात कही समुझाय।
खता कसूर माफ सब करना जहाँ बिगड़ा हो लेव बनाय ॥
जो कुछ विनय करन था सब से उसको कह दिया गाय सुनाय
ओरेम् शांती करो अन्त में भारत शांति भयो दिखलाय ॥

समाप्तम् ॥

"सुरसरि" प्रेस, कानपुर में मुद्रित।

हमारे यहां से सस्ता माल मँगाओ

और

फायदा पूरा उठाओ

सर्व प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता-

लाला बाबूलाल बुकसेलर

मंदिर प्रयागनारायण कानपुर.